



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)

PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 219]

नई दिल्ली, बुधवार, अप्रैल 15, 2009/चैत्र 25, 1931

No. 219]

NEW DELHI, WEDNESDAY, APRIL 15, 2009/CHAITRA 25, 1931

रक्षोपाय, सीमाशुल्क एवं केन्द्रीय उत्पाद शुल्क महानिदेशालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 15 अप्रैल, 2009

प्रारंभिक जांच परिणाम

विषय : एक्रिलिक फाइबर के आयातों के बारे में रक्षोपाय जांच ।

सा.का.नि. 252(अ).—सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 और सीमाशुल्क टैरिफ (रक्षोपाय शुल्क का अभिज्ञान एवं निर्धारण) नियम, 1997 को ध्यान में रखते हुए ।

1. प्रक्रिया

- i. भारत में एक्रिलिक फाइबर के आयातों के बारे में रक्षोपाय जांच की शुरुआत की सूचना 09 अप्रैल, 2009 को जारी की गई थी और उसे उसी दिन भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित किया गया था । सूचना की एक प्रति समस्त ज्ञात हितबद्ध पार्टियों को भी निम्नानुसार भेजी गई थी :-

घरेलू उत्पादक

- क. इण्डियन एक्रिलिक्स लि.,
सीएसओ 49-50, सेक्टर 26,
मध्य मार्ग, चंडीगढ़-161019,
- ख. वर्धमान एक्रिलिक्स लि.,
वर्धमान प्रेमिसेस,
चण्डीगढ़ रोड,
लुधियाना-141010
- ग. पशुपति एक्रिलोन लि.,
एम-14, कनॉट प्लेस,
नई दिल्ली-110001

आयातक एवं प्रयोक्ता

- क. राजस्थान स्पिनिंग एवं वीविंग मिल्स लि.
भीलवाड़ा भवन
40-41, कम्युनिटी सेंटर
नई दिल्ली-110065
- ख. वर्धमान स्पिनिंग एंड जेनरल मिल्स
चंडीगढ़ रोड
लुधियाना-141011
पंजाब
- ग. दीपक स्पिन्स लि.
सीएसओ 16, दूसरा तल,
सेक्टर 26
चंडीगढ़-160019
- घ. मालवा कॉटन स्पिन्स लि.
इंडस्ट्रियल एरिया “ ए ”
लुधियाना- 141003
पंजाब
- ङ. शिवालिया स्पिनिंग एंड वीविंग मिल्स (प्रा.) लि.
गाँव धंदारी खुर्द
जी टी रोड
धंदारी खुर्द, लुधियाना
- च. दीपक स्पिन्स लि.
121, इंडस्ट्रियल एरिया
जिला-सोलन गढ़डी (हि. प्र.)
- छ. टेक्सास वूलन मिल्स (प्रा.) लि.
माचीवाला रोड
कोहारा
जिला-दुर्ग

- ज. शिवा फेब्रिकेटर (प्रा.) लि.
गाँव इराक
कोहारा माचीवाड़ा रोड
माचीवाड़ा, जिला-लुधियाना
- झ. सुप्रीम टैक्स मार्ट लि.
424, इंड. एरिया-ए
चीमा चौक, लुधियाना
- ट. योगेन्द्र वर्स्टेड लि.
गाँव लाइ कलॉ
नीलम पुल के निकट
तहसील समराला
जिला लुधियाना
- ठ. श्री राजस्थान सिन्टैक्स लि.
पो. बॉ. 5, सिमालवाड़ा रोड
गाँव उदयपुर
डुंगरपुर, राजस्थान
- ड. बाँसवाड़ा सिन्टैक्स लि.
इंड. एरिया, दहाद रोड
पो. बॉ. 21,
बाँसवाड़ा, राजस्थान
- ढ. गंगा एक्रोवूल्स लि.
जी टी रोड
गाँव कोट शेखों
द खन्ना
लुधियाना
- ण. शीतल फाइबर्स लि.
ए-17, फोकल प्वाइंट (एक्सट्रा)
जलंधर
- त. अरिसुवाना इंड. लि.
गाँव जसपालान (दोराहा)
तहसील खन्ना, लुधियाना

रा. स्पोर्ट किंग इंडिया लि.
गाँव मेहरबान
रेहन रोड, लुधियाना

डिडल कोटेक्स लि.
दीपीओ जुगियाना
जी टी रोड, लुधियाना

गर्ग एक्रिलिक्स
कंगन वाल रोड
डाक जुगियाना
जी टी रोड, लुधियाना

निर्यातक

क. टेकवांग इंड कं. लि.
ताइक्वांग बिल्डिंग,
162-1 2-केए
चेंगचुंगडोंग 2-जीए
जुंग-गु, सिओल, दक्षिण कोरिया

ख. थाई एक्रिलिक फाइबर कं. लि.
महातुल प्लाजा बिल्डिंग,
16वाँ तल, 188/168-169 प्लोन चिट रोड
लुम्पिनी, बैंकॉक
थाइलैंड-10330

ग. सुडामेरकाना डि फाइब्रास एस. ए.
एवी. नेस्टर गेम्बेटा 6815
कलाओ, पेरू-कलाओ-1

घ. एक-पा टेक्सटिल हराकत पजारियामा ए. एस.
मिराले सफीक बे सैक, अक हान
सं. 15-17 कैट 1-2
34437 गुमशुयु, तकसिम
इस्ताम्बुल/तुर्की

- ड. ड्रालोन जीएमबीएच
बेयर रैक
पो. ऑ. बॉक्स-100485
बिल्डिंग बी 900
डी-41522 दोरमेजन
- च. पॉलिएक्रिल ईरान कं.
अबशास्- सदजाद इंटरसेक्शन
इस्फाहाह- ईरान
- छ. चाइना जिलिन कैमिकल फाइबर ग्रुप कं. लि.
सं. 516-1, जिजुहजान स्ट्रीट
जिलिन सिटी
चीन
- ज. फार्मोसा प्लास्टिक्स कॉर्पोरेशन
201, तुंग हुआ, एन. रोड
ताइपेई, ताइवान
आर. ओ. सी. ताइवान
- झ. मोटे फाइबर हाई एस पनिया एस. ए.
अरिबाऊ 185-187, 6ए
प्लांट्स
0 8021, बार्सिलोना, स्पेन
- ट. अलेक्जेंड्रिया फाइबर कं.
एसएई अल नंदा रोड
अमरेया, अलेक्जेंड्रिया, मिस्र
- ठ. आक्सा अहरिलिन किम्या सनाई कार्पो.
सं. 6 बहसीलिवलर
इस्ताम्बुल 34194
तुर्की

ii. सूचना की एक प्रति नई दिल्ली स्थित उनके दूतावासों के जरिए संबद्ध देशों की सरकारों को भी भेजी गई थी।

iii. प्रश्नावलियाँ समस्त ज्ञात घरेलू उत्पादकों, निर्यातकों और आयातकों को भी उसी दिन भेजी गई थी और उनसे 30 दिन के भीतर अपने उत्तर प्रस्तुत करने के लिए कहा गया था।

iv. आवेदन, उत्तर और अतिरिक्त अनुरोधों के समस्त अगोपनीय रूपांतरण सार्वजनिक फोल्डर में रखे गए हैं।

2. घरेलू उद्योग के विचार

- i. यह आवेदन फोरम ऑफ एक्रिलिक फाइबर मैन्यूफैक्चरर्स, सूट 443, चौथा तल, अशोक होटल, वाणक्यपुरी, नई दिल्ली-110021 द्वारा घरेलू उत्पादकों (1) इण्डियन एक्रिलिक्स लि., शीपराओ 49-50, सेक्टर 26, मध्य मार्ग, चंडीगढ़-161019 (2) वर्धमान एक्रिलिक्स लि., वर्धमान प्रेमिसेस, चण्डोगढ़ रोड, लुधियाना रोड-141010 और (3) पशुपति एक्रिलोन लि., एम-14, कर्नॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001 की ओर से भारत में सभी रूपों में एक्रिलिक फाइबर के आयातों पर रक्षायुक्त शुल्क लगाने के लिए दायर किया गया है ताकि भारत में हुए एक्रिलिक फाइबर के संवर्धित आयातों के कारण हुई गंभीर क्षति से एक्रिलिक फाइबर (स्टेपल एवं टो) के घरेलू उत्पादकों की सुरक्षा की जा सके। आवेदकों ने निम्नलिखित प्रमुख मुद्दे उठाए हैं।
- ii. आवेदकों ने आरोप लगाया है कि एक्रिलिक फाइबर (स्टेपल एवं टो) जिसे वाणिज्यिक रूप से केवल एक्रिलिक फाइबर के रूप में जाना जाता है, के भारत में हुए संवर्धित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को गंभीर क्षति हुई है और घरेलू उद्योग को गंभीर क्षति का खतरा बना हुआ है। एक्रिलिक फाइबर सिंथेटिक पॉलीमर की एक लम्बी शृंखला होती है जिसमें एक्रोनाइट्राइल इकाइयाँ भार के अनुसार कम-से-कम 85% होती हैं। एक्रिलिक फाइबर सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 के अंतर्गत एक्रिलिक स्टेपल फाइबर या एक्रिलिक टो हो सकता है। तथापि इन दोनों मद्दों को वाणिज्यिक भाषा में एक्रिलिक फाइबर के रूप में जाना जाता है। एक्रिलिक स्टेपल फाइबर तथा एक्रिलिक टो के बीच एक मात्र भेद उसकी लम्बाई में अंतर होता है। दो मीटर तक की लम्बाई के फाइबर को स्टेपल फाइबर के रूप में जाना जाता है। अलग-अलग रूपों में एक्रिलिक फाइबर को निम्नानुसार वर्गीकृत किया जाता है।

तालिका 1

उत्पादों के नाम	एचएसएन अध्याय शीर्ष	सी.शु. टैरिफ शीर्ष	आईटीसी शीर्ष
एक्रिलिक फाइबर	i. 55013000 (फिलामेंट टो) ii. 55033000 (फाइबर-कताई अप्रसंस्कृत) हेतु iii. 55063000 (फाइबर-कताई प्रसंस्कृत) हेतु	i. 55013000 (फिलामेंट टो) ii. 55033000 (फाइबर-कताई अप्रसंस्कृत) हेतु iii. 55063000 (फाइबर-कताई हेतु प्रसंस्कृत)	i. 55013000 (फिलामेंट टो) ii. 55033000 (फाइबर-कताई अप्रसंस्कृत) हेतु iii. 55063000 (फाइबर-कताई प्रसंस्कृत) हेतु

- iii. उन्होंने आरोप लगाया है कि आयातों में वृद्धि कम कीमतों पर हो रही है जिससे उन्होंने अपना बाजार हिस्सा गँवाया है ।
- iv. कम कीमतों पर आयातों में वृद्धि अप्रत्याशित घटनाक्रमों के कारण हुई है जैसाकि नीचे उल्लेख किया गया है ।

क. इस समय फाइबर उद्योग एशिया में केंद्रित है जिसका हिस्सा एक्रिलिक फाइबर के कुल वैश्विक उत्पादन में 60% से अधिक है । एशिया के प्रमुख प्रतिस्पर्धी अर्थात् चीन, जापान और ताइवान की उनकी संबंधित उत्पादन क्षमताओं की तुलना में घरेलू माँग बहुत कम है । ये देश मुख्यतः अपने पारंपरिक बाजारों अर्थात् अमरीका और यूरोप को अपने बेशी उत्पादन का निर्यात कर रहे थे । वैश्विक भंडी के कारण एक्रिलिक फाइबर के बाजार में विश्व भर में काफी अधिक कमी आई है और यह कमी अमरीका, यूरोप और चीन में अधिक देखी गई है । इसके अलावा, चीन के बड़े संयंत्र सरकार द्वारा संचालित सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम हैं । चीन की क्षमता के लगभग 71% पर नियंत्रण सरकार द्वारा अपने पीएसयू के जरिए रखा जाता है । इसके अलावा, ये क्षमताएँ अत्यधिक समेकित प्रमुख पेट्रो रसायन कॉम्प्लैक्सों का एक भाग हैं जो अपरिष्कृत तेल के शोधन से शुरू होती हैं । चीन की सरकार द्वारा एक्रिलिक फाइबर के अनुषंगी संयंत्रों का पूर्ण क्षमता पर प्रचालन किया जाता है क्योंकि इससे उक्त शृंखला में कॉम्प्लैक्स के प्रत्येक संयंत्र पर प्रभाव पड़ेगा । इसका परिणाम यह है कि इन इकाइयों के पास एक्रिलिक फाइबर का भारी स्टॉक पड़ा हुआ है जिन्हें वे कम कीमत पर भारत को निर्यात करने की कोशिश कर रही हैं जो कि अभी भी अच्छी विकास दर से विकास कर रहा है । परिणामतः उन्होंने कम कीमत पर भारतीय बाजार में उत्पाद का निर्यात शुरू

किया जिससे घरेलू उद्योग को गंभीर क्षति हो रही है और गंभीर क्षति होने का खतरा उत्पन्न हो गया है।

- v. माँग में कमी के बावजूद उनकी मालसूची में तेजी से वृद्धि हुई है।
- vi. घरेलू उद्योग लाभ में चल रहा था जो वर्ष 2008-09 के प्रथम नौ माह में भारी घाटे में चला गया।
- vii. उन्होंने संवर्धित आयातों से हुई गंभीर क्षति और सतत रूप से गंभीर क्षति होने के खतरे के विरुद्ध रक्षोपाय शुल्क लगाने का अनुरोध किया है ताकि एक्रिलिक फाइबर के घरेलू उत्पादों की रक्षा की जा सके।
- viii. उन्होंने आरोप लगाया है कि अप्रत्याशित घटनाक्रम से आयातों में वृद्धि हुई है और आयातों में वृद्धि होने से गंभीर क्षति हुई है। ऐसा कोई कारण नहीं है जिससे घरेलू उद्योग को हुई गंभीर क्षति/गंभीर क्षति के खतरे की वजह माना जा सके।
- ix. आवेदकों ने अनुरोध किया है कि एक्रिलिक फाइबर पर रक्षोपाय शुल्क लगाए जाने से सार्वजनिक हित को कोई नुकसान नहीं पहुँचेगा क्योंकि घरेलू एक्रिलिक फाइबर की कीमत में वृद्धि नहीं होगी। इसके अलावा, एक्रिलिक फाइबर की कीमत में किसी वृद्धि का अंतिम उपभोक्ता उत्पादों पर काफी कम प्रभाव पड़ेगा। चूँकि अंतिम उपभोक्ता उत्पादों पर पर्याप्त मार्जिन है इसलिए उसे लागत में खपाया जाएगा और जनता पर कुल मिलाकर कोई बोझ नहीं पड़ेगा। रक्षोपाय शुल्क लगाए जाने से भारत में अंतिम उपभोक्ता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।
- x. आवेदकों ने कुशलता में सुधार करने और अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धियों के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए लागत मितव्ययिता लाने हेतु उचित कार्यनीति अपनाने का प्रस्ताव किया है।
- xi. उन्होंने आपात परिस्थितियों जिनमें ऐसी क्षति होगी जिसकी भरपाई करना कठिन होगा, के मद्देनजर अनंतिम रक्षोपाय शुल्क लगाने का भी अनुरोध किया है।

3. महानिदेशक के जांच परिणाम

प्राकृतिक न्याय का मुद्दा

- i. तुरंत रक्षोपाय शुल्क लगाने के मुद्दे की जांच की गई थी। यह पाया गया है कि 29.03.1995 और 12.11.2008 के बीच की अवधि के दौरान डब्ल्यूटीओ को कुल 168 रक्षोपाय संबंधी जांच शुरुआतों की सूचना दी गई है। यह पाया गया है कि इनमें से 15 मामलों में रक्षोपाय जांच की शुरुआत के 30 दिन के भीतर अनंतिम रक्षोपाय की सिफारिश की गई है/उन्हें लागू किया

गया है। कुछ मामलों में जांच शुरुआत की तारीख को भी अनंतिम रक्षोपाय की सिफारिश की गई है। दिनांक 29.07.1997 की अधिसूचना सं. 35/1997-एनटी-सी.शु. के तहत जारी सीमाशुल्क टैरिफ (रक्षोपाय शुल्क का अभिज्ञान एवं निर्धारण) नियम, 1997 के नियम 9 में यह निर्धारित है कि महानिदेशक जांच की कार्यवाही तुरंत शुरू करेगा और निर्णायक परिस्थितियों में वह गंभीर क्षति या गंभीर क्षति के खतरे के बारे में प्रारंभिक जांच परिणाम दर्ज कर सकता है। जांच को शासित करने वाले सिद्धांत सीमाशुल्क टैरिफ (रक्षोपाय शुल्क का अभिज्ञान एवं निर्धारण) नियम, 1997 के नियम 6 में निर्धारित हैं जो नियम 9 से स्वतंत्र है। सीमाशुल्क टैरिफ (रक्षोपाय शुल्क का अभिज्ञान एवं निर्धारण) नियम, 1997 के नियम 15 में जांच संपन्न होने के बाद पहले से अधिरोपित और संग्रहीत अनंतिम शुल्क से कम रक्षोपाय शुल्क लगाए जाने के मामले में रक्षोपाय शुल्क में अंतर की वापसी का प्रावधान है। उक्त नियम के नियम 6, 9 और 15 के सुमेलित पाठन से यह निष्कर्ष निकलता है कि नियमों में प्रारंभिक जांच परिणामों के आधार पर अनंतिम रक्षोपाय शुल्क की तुरंत सिफारिश करने और इस बात की पुष्टि होने के बाद कि प्राकृतिक न्याय के सिद्धांत का अनुपालन करते हुए नियम 6 के तहत जांच संपन्न होने के बाद लगाया गया शुल्क अनंतिम रक्षोपाय शुल्क से कम है तो उसके अंतर को वापस करने का प्रावधान है तथापि निर्णायक परिस्थितियों में अनंतिम रक्षोपाय शुल्क लगाए जाने में होने वाले किसी विलंब से ऐसी क्षति हो सकती है जिसकी भरपाई करना कठिन होगा। यह विवेकपूर्ण माना गया था कि इन परिस्थितियों का विश्लेषण किया जाए ताकि यह निर्धारण किया जा सके कि क्या वे आपात परिस्थितियों की श्रेणी में आती हैं।

ii. इस मुद्दे कि क्या पहले से प्रवृत्त पाटनरोधी शुल्क के बावजूद रक्षोपाय शुल्क लागू किया जा सकता है, की जांच की गयी थी। धारा 9क में पाटन मार्जिन से अनधिक शुल्क लगाए जाने का प्रावधान है। सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 8ख, उसमें उल्लिखित परिस्थितियों में भारत में आयातित वस्तु पर रक्षोपाय शुल्क लगाए जाने से संबंधित है जिसका उद्देश्य ऐसी संवर्धित मात्राओं और ऐसी स्थितियों में हो रहे आयातों से सतत रूप में होने वाली गंभीर क्षति से घरेलू उद्योग की रक्षा करना है जिन आयातों की वजह से घरेलू उद्योग को गंभीर क्षति हुई है या उसका खतरा उत्पन्न हो गया है। यह नोट किया जाता है कि रक्षोपाय करार तथा गेट 1994 के अनुच्छेद XIX के साथ पठित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 8ख के अंतर्गत रक्षोपाय शुल्क लगाने का कारण पाटन या सब्सिडीशुदा आयात नहीं है अपितु आयातों में अचानक और तेजी से हुई वृद्धि है जिसकी वजह पाटन या सब्सिडी नहीं है। अतः इन दोनों शुल्कों को लगाने और इन शुल्कों को लगाने का प्रयोजन अलग-अलग है। इसके अलावा, सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 की धारा 8ख की उपधारा (3) या प्रवृत्त किसी अन्य कानून के अंतर्गत एक ही समय पर कई शुल्क लगाए जाने की परिकल्पना की गयी है। धारा 8(ख) की उप धारा (3) में निम्नानुसार उल्लेख है :

“इस धारा के अंतर्गत प्रभाय शुल्क इस अधिनियम या तत्समय प्रवृत्त किसी अन्य कानून के अंतर्गत लगाए गए किसी अन्य शुल्क के अतिरिक्त होगा।”

अतः यह स्पष्ट हो जाता है कि पहले से प्रवृत्त पाटनरोधी शुल्क के बावजूद रक्षोपाय शुल्क लगाने पर कानून द्वारा लगाया गया कोई प्रतिबंध नहीं है बशर्ते कि सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 की धारा 8ख के अंतर्गत रक्षोपाय लागू करने की अपेक्षाएँ पूरी होती हों।

iii. जॉचाधीन उत्पाद :

क. आवेदकों ने आरोप लगाया है कि एक्रिलिक फाइबर (स्टेपल एवं टो) जिसे वाणिज्यिक रूप से केवल एक्रिलिक फाइबर के रूप में जाना जाता है, के भारत में हुए संविधित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को गंभीर क्षति हुई है और घरेलू उद्योग को गंभीर क्षति का खतरा बना हुआ है। एक्रिलिक फाइबर सिंथेटिक पॉलीमर की एक लम्बी शृंखला होती है जिसमें एक्रोनाइटाइल इकाइयाँ भार के अनुसार कम-से-कम 85% होती हैं। एक्रिलिक फाइबर सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 के अंतर्गत एक्रिलिक स्टेपल फाइबर या एक्रिलिक टो हो सकता है। तथापि इन दोनों मदों को वाणिज्यिक भाषा में एक्रिलिक फाइबर के रूप में जाना जाता है। एक्रिलिक स्टेपल फाइबर तथा एक्रिलिक टो के बीच एक मात्र भेद उसकी लम्बाई में अंतर होता है। दो मीटर तक की लम्बाई के फाइबर को स्टेपल फाइबर के रूप में जाना जाता है। अलग-अलग रूपों में एक्रिलिक फाइबर सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 की अनुसूची 1 के अंतर्गत 55013000 (फिलामेंट टो) 55033000 (फाइबर-कटाई हेतु अप्रसंस्कृत) तथा 55063000 (फाइबर-कटाई हेतु प्रसंस्कृत) के अंतर्गत वर्गीकृत हैं। एक्रिलिक फाइबर का व्यापक रूप से उपयोग शीतकालीन वस्त्रों के विनिर्माण हेतु कच्ची सामग्री में किया जाता है।

ख. 8-अंकीय स्तर पर इन तीन शीर्षों के अंतर्गत आने वाले उत्पाद उनकी तकनीकी विशेषताओं, रासायनिक संरचना और अन्य मूलभूत विशेषताओं के अनुसार एक समान हैं। इन तीनों शीर्षों के अंतर्गत आने वाले उत्पादों का सामान्य उपयोग होता है। टो को काटने या टो/फाइबर आदि की कठिंग की प्रक्रिया के परिणामस्वरूप कोई खास मूल्यवर्धन नहीं होता है। एक्रिलिक फाइबर के प्रयोक्ता उपर्युक्त तीनों उत्पादों में से किसी के साथ अपना प्रचालन शुरू कर सकते हैं। अतः ये उत्पाद तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से एक-दूसरे के स्थानापन्न हैं और इसलिए ये समान और परस्पर प्रतिस्पर्धी उत्पाद हैं। गुणवत्ता के संबंध में छिटपुट संभावित अंतर के बावजूद इन उत्पादों की एक समान मूलभूत भौतिक विशेषताएँ तथा समान अंतिम उपयोग हैं। इनकी बिक्री एक समान या समानु रूप बिक्री माध्यमों के जरिए की जाती है। ये उत्पाद मुख्यतः कीमत के संबंध में प्रतिस्पर्धी करते हैं। 8-अंकीय स्तर पर केवल एक शीर्ष पर रक्षोपाय शुल्क लगाने से कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होगा क्योंकि आयातक अन्य प्रतिस्पर्धी उत्पादों का आयात शुरू कर देंगे। घरेलू उद्योग तीनों उत्पादों का विनिर्माण करता है। उपर्युक्त के मद्देनजर रक्षोपाय जांच के प्रयोजनार्थ उत्पाद क्षेत्र में एक्रिलिक फाइबर शामिल है जिसमें उपर्युक्त उत्पाद भी आता है जिसे “जॉचाधीन उत्पाद” मानने की जरूरत है।

iv. घरेलू उद्योग- यह आवेदन फोरम ऑफ एक्रिलिक फाइबर मैन्यूफैक्चरर्स, द्वारा घरेलू उत्पादकों (1) इण्डियन एक्रिलिक्स लि. (2) वर्धमान एक्रिलिक्स लि. और (3) पशुपति एक्रिलोन लि. की ओर से भारत में सभी रूपों में एक्रिलिक फाइबर के आयातों पर रक्षोपाय शुल्क लगाने के लिए दायर किया गया है। आवेदकों का हिससा कुल घरेलू उत्पादन का 100% बनता है। तदनुसार, आवेदक सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 8ख की उप-धारा (6) के खण्ड (ख) के अनुसार घरेलू उद्योग हैं।

v. अप्रत्याशित घटनाक्रम : संज्ञित आर्थिक मंदी व अनपेक्षित आर्थिक पिघलन एवं रिसेसन के परिणामस्वरूप कुछ देशों का निर्यात कम हुआ है। तथा उनकी उत्पादन क्षमता निषक्य हुई है। इन देशों के निर्यातक अपने निर्यात को अधिक मात्रा में कम कीमत पर भारतीय बाजार में खपा रहे हैं। क्योंकि भारतीय बाजार अभी भी वृद्धि पर है।

vi. **संवर्धित आयात :** थाइलैंड, जापान, जर्मनी, चीन, कोरिया, ताईवान और बेलारूस से भारत में एक्रिलिक फाइबर (स्टेपल तथा टो) का भारी मात्रा में आयात किया जाएगा। एक्रिलिक फाइबरों के आयातों में समग्र रूप में और घरेलू बिक्री की तुलना में वृद्धि की प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई है। जांच अवधि के दौरान आयातों का हिस्सा निम्नानुसार रहा है :-

तालिका 2

वर्ष	आयात (मी. टन)	घरेलू बिक्री (मी. टन)	आयातों का % हिस्सा	घरेलू बिक्री का % हिस्सा
2005-06	11747	102516	10.28	89.72
2006-07	11,700	85168	12.08	87.92
2007-08	7,360	77513	8.67	91.33
2008-09 (प्रथम नौ माह)	8,393	54641	13.32	86.68

इस प्रकार एक्रिलिक फाइबर के आयातों में समग्र रूप में और कुल घरेलू बाजार की तुलना में वृद्धि हुई है। इसके अलावा, वर्ष 2007-08 की तुलना में वर्ष 2008-09 में अत्यधिक और अचानक वृद्धि हुई है।

vii. **गंभीर क्षति और गंभीर क्षति का खतरा**

क. **बिक्री :** पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में वर्ष 2008-09 के दौरान जाँचाधीन उत्पाद की बिक्री में अचानक और तेजी से गिरावट आई है जैसाकि निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट हो जाता है।

तालिका 3

वर्ष	आयात (मी. टन)	घरेलू बिक्री (मी. टन)	आयातों का % हिस्सा	घरेलू बिक्री का % हिस्सा
2005-06	11747	95,387	10.96	89.04
2006-07	11,700	76,497	13.27	86.73
2007-08	7,360	73,098	9.15	90.85
2008-09 (प्रथम नौ माह)	8,393	45,917	15.45	84.55

ख. **घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा :** वर्ष 2005-06 में घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा 89.04% था जो वर्ष 2006-07 में घटकर 86.73% हो गया और तत्पश्चात् वर्ष 2007-08 में सुधरकर 90.85% हो गया। वर्ष 2008-09 के प्रथम नौ माह के दौरान घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में भारी गिरावट आई जो 84.55% हो गया। जबकि आयातों में समग्र रूप में और तुलनात्मक रूप में वृद्धि हुई।

ग. **उत्पादन :** जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग द्वारा जांचाधीन उत्पाद के औसत मासिक उत्पादन में सतत गिरावट देखी गयी है।

तालिका: 4

वर्ष	2005-06	2006-07	2007-08	2008-09 (नौ माह)
घरेलू उत्पादन (मी. टन)	102516	85168	77513	54641
औसत मासिक उत्पादन (मी. टन)	8543	7097	6459	6071

घ. **क्षमता उपयोग :** वर्ष 2005-06 की तुलना में वर्ष 2006-07 के दौरान क्षमता उपयोग में सुधार हुआ परंतु उपयोग में निरंतर गिरावट आई। वित्त वर्ष 2008-09 की तीसरी तिमाही में आवेदकों का क्षमता उपयोग वर्ष 2006-07 में 93.19% के उच्च क्षमता उपयोग से घटकर 80.95% हो गया।

तालिका 5

	2005-06	2006-07	2007-08	2008-09 (अप्रैल- दिस)
क्षमता उपयोग (%)	88.68	93.19	86.13	80.95

ड. **उत्पादकता :** प्रारंभिक जांच से ऐसा कोई संकेत नहीं मिलता है जिससे उत्पादकता में कमी के कारण क्षति का पता चल सके।

च. **लाभप्रदता :** आवेदक वर्ष 2007-08 तक लाभ में चल रहा था तथापि वर्ष 2008-09 के प्रथम नौ माह में आवेदक ने वर्ष 2006-07 में 100 रु./कि.ग्रा. (सूचीबद्ध) का लाभ लेते हुए 3318 रु./कि.ग्रा. (सूचीबद्ध) का घाटा उठाया है।

तालिका 6

	2005-06	2006-07	2007-08	2008-09 (अप्रैल- दिस)
लाभ/कि.ग्रा.	-721	100	106	-3318

छ. रोजगार : घरेलू उद्योग कर्मचारियों के बेकार रहने के कारण माँग में कमी की वजह से निम्नानुसार बार-बार बंद हुआ है :-

Table 7

संयंत्र	बंद होने की अवधि	क्षमता बंदी
इंडियन एक्रिलिक लि.	19.8.08 से 14.11.08 तक (तीन माह)	10500 मी. टन
पशुपति एक्रिलोन लि.	11.8.08 से 26.8.08 तक 18.9.08 से 16.10.08 तक 8.12.08 से 21.12.08 तक (दो माह)	5000 मी. टन
वर्धमान एक्रिलिक लि.	दिस.- जनवरी, 09 के दौरान (एक माह)	900 मी. टन

ज. क्षति की अवधि :

क. उपर्युक्त क्षति मापदण्डों की जाँच से यह पता चलता है कि वर्ष 2008-09 के प्रथम नौ माह की हाल की अवधि में घरेलू उद्योग को अधिकतम क्षति हुई है। अर्जेंटीना, फुटवियर, (ईसी-डब्ल्यूटी/डीएस121/एबी/आर) में डब्ल्यूटीओ अपीलीय निकाय ने यह निर्णय दिया था कि संवर्धित आयात 5 वर्ष से अधिक की अवधि में नहीं होने चाहिए। अपीलीय निकाय ने यह माना था कि आयात में वृद्धि “ गंभीर क्षति ” होने या उसका खतरा उत्पन्न होने के लिए हाल की अवधि में होनी चाहिए। इस संबंध में, निर्णय का पैरा 130 निम्नानुसार है :

पैरा 130 : इसी प्रकार यद्यपि, हम यह नहीं पाते हैं कि पैनल ने रक्षोपाय करार के अनुच्छेद 2.8 में अपेक्षा को लागू करने में गलती की है कि “ उत्पाद का आयात..... ऐसी संवर्धित मात्राओं में किया जा रहा है ” तथापि हम उक्त अपेक्षा के अर्थनिरूपण में पैनल में कुछ अभाव पाते हैं। हम यह नोट करते हैं कि पैनल ने अनुच्छेद 2.8 में उल्लिखित इस शर्त का कई अवसरों पर पैनल की रिपोर्ट में “ संवर्धित आयातों ” के रूप में ही उल्लेख किया है। तथापि, वास्तविक जरूरत यह है और हम इस बात पर जोर देते हैं कि यह अपेक्षा रक्षोपाय करार के अनुच्छेद 2.8 और गैट 1994 के अनुच्छेद XIX :1 (क) में पाई जाती है जो यह है कि “ ऐसे उत्पाद का आयात..... ऐसी संवर्धित मात्राओं में किया जा रहा है ”, “ और ऐसी स्थितियों में हो रहा है जिससे घरेलू उद्योग को गंभीर क्षति हुई है या उसका खतरा उत्पन्न हो गया है ”। (जोर दिया गया) यद्यपि हम पैनल से इस बात पर सहमत हैं कि आयातों की “ संवर्धित मात्रा ” में केवल कोई वृद्धि नहीं हो सकती तथापि हम पैनल से इस बात पर सहमत नहीं हैं कि इस बात की जाँच करना उचित है कि आयातों में यह प्रवृत्ति पाँच वर्ष की अवधि के दौरान जाँची जाए। हमारी राय में रक्षोपाय करार के अनुच्छेद 2.1 और गैट 1994 के अनुच्छेद XIX :1 (क) के क्रिया वाक्य “ आयात किया जा रहा है ” से यह पता चलता है कि सक्षम प्राधिकारियों के लिए हाल के आयातों न कि पिछले कई वर्षों के दौरान हुए आयातों की मात्रा प्रवृत्ति या उस मामले में

कई वर्षों की अन्य अवधि के दौरान हुए आयातों की जांच करनी अपेक्षित होती है । हमारी राय में वाक्यांश “ आयात किया जा रहा है ” का तात्पर्य यह है कि आयातों में वृद्धि अचानक और हाल ही में होनी चाहिए ।

ख. सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 जो रक्षोपाय करार तथा गैट 1994 के अनुच्छेद XIX पर आधारित है की धारा 8ख में शामिल भारतीय घरेलू कानून में भी वर्तमान काल का उपयोग किया गया है । अतः रक्षोपाय शुल्क ऐसे मामले में लागू किया जा सकता है जहाँ आयातों में वृद्धि पाँच वर्ष की अवधि के बजाय हाल की कम अवधि में हुई हो । चूँकि इस मामले में आयातों में वृद्धि नौ माह की हाल की अवधि में हुई है जो अचानक, तीव्र और काफी अधिक है और इससे “ गंभीर क्षति ” भी हो रही है जैसाकि उपर्युक्त विभिन्न मापदण्डों से स्पष्ट हो जाता है अतः यह रक्षोपाय शुल्क लगाने का उपयुक्त मामला है ।

1. रक्षोपाय करार के अनुच्छेद 2.1 में अतिरिक्त शब्द “ समग्र रूप में या घरेलू उत्पादन की तुलना में ” शामिल हैं ।
2. पैनल ने पैगल रिपोर्ट के पैरा 8.166 की पाद टिप्पणी 530 में यह स्वीकार किया है कि वर्तमान काल का उपयोग किया जा रहा है जिसने जो उल्लेख है उससे “ यह पता चलेगा कि किसी जांच की शुरुआत कब हुई है और उसका अंत हाल की अवधि के बाद नहीं होगी । ” (जोर दिया गया) यहाँ हम पैनल से सहमत नहीं हैं । हमारा मानना है कि संगत जांच अवधि न केवल हाल की अवधि में समाप्त होनी चाहिए अपितु जांच अवधि हाल की अवधि होनी चाहिए ।

viii. संवर्धित आयात तथा गंभीर क्षति या गंभीर क्षति के खतरे के बीच कारणात्मक संबंध :-

क. समय मान पर विभिन्न क्षति मापदण्ड निम्नानुसार हैं :

तालिका 8

वर्ष	2005-06	2006-07	2007-08	अप्रैल'08-दिस.'08
आयात (सूचीबद्ध)	160.00	159.00	100.00	152.00
घरेलू उद्योग का हिस्सा %	89.04	86.73	90.85	84.55
आयातों का हिस्सा %	10.96	13.27	9.15	15.45
घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग का %	88.68	93.19	86.13	80.95
लगाई गई पूँजी पर आय %	-1.74	7.63	7.75	-26.04
उत्पादन प्रतिदिन (सूचीबद्ध)	100.00	111.63	102.79	97.67
अंतिम स्टॉक (सूचीबद्ध)	100.00	121.53	58.81	188.25

ख. वर्ष 2005-06 से वित्त वर्ष 2008-09 के प्रथम नौ माह तक की अवधि हेतु उपर्युक्त मापदण्डों के व्यापक मूल्यांकन से एक्रिलिक फाइबर के भारतीय उत्पादकों को गंभीर क्षति होने और पर्याप्त विकृति आने का पता चलता है। उपर्युक्त आंकड़ों और चार्ट से यह पता चलता है कि अप्रैल-दिसंबर, 2008 में आयातों में वर्ष 2007-08 की तुलना में समग्र रूप में और उनके हिस्से के रूप में वृद्धि हुई है। इसी अवधि में जब आयात में वृद्धि हुई है तो घरेलू उद्योग को क्षमता उपयोग, घरेलू उद्योग के हिस्से, लगाई गई पूंजी पर आय, प्रतिदिन उत्पादन के रूप में क्षति हुई है तथा अंतिम स्टॉक में वृद्धि हुई है। अतः हाल की अवधि में आयात में वृद्धि हुई है जिसके परिणामस्वरूप इसी अवधि में घरेलू उद्योग को गंभीर क्षति हुई है। चालू वित्त वर्ष के दौरान हुए भारी घाटे की तुलना पूर्ववर्ती वर्षों के लाभ के साथ की गई थी जिसका मिलान आयातों के हिस्से में पर्याप्त वृद्धि से भी किया गया था। इससे कम कीमतों पर आयातों में वृद्धि और घरेलू उद्योग को हुई गंभीर क्षति के बीच प्रत्यक्ष सह-संबंध का पता चलता है और आयातों में वृद्धि से कीमतों पर दबाव तथा घरेलू उद्योग द्वारा बेची गई मात्रा में कमी के रूप में क्षतिकारी प्रभाव पड़ा है।

IX. पाटनरोधी कारक : इस समय एक्रिलिक फाइबर पर निम्नानुसार पाटनरोधी शुल्क लागू है।

तालिका 9

अधिसूचना सं.	देश	शुल्क की राशि	तक वैध
117/2004-सी.शु. दिनांक 30.12.2004	बेलारूस	निर्धारणीय मूल्य तथा 1681.35 डा./मी. टन के बीच अंतर	29.12.2009
114/2004-सी.शु. दिनांक 21.12.2004	जापान	निर्धारणीय मूल्य तथा 1681 डा./मी. टन के बीच अंतर	20.12.2009
123/2004-सी.शु. दिनांक 20.11.2008	कोरिया गण.	0.225 डा./ कि.ग्रा.	19.11.2013
123/2004-सी.शु. दिनांक 20.11.2008	थाईलैंड	0.16 डा./कि.ग्रा. से 0.313 डा./कि.ग्रा.	19.11.2003

हम प्रथम दृष्टया आवेदक के इस तर्क से सहमत हैं कि वर्तमान क्षति पाटन के कारण नहीं हुई है। पाटन के कारण हुई क्षति का निवारण पाटन मार्जिन के बराबर पाटनरोधी शुल्क लगाकर किया जा चुका है। वर्तमान क्षति केवल संवर्धित आयातों के कारण हुई है।

X. समायोजन योजना - घरेलू उत्पादक ने लागत में कटौती हेतु विस्तृत समायोजन योजना प्रस्तुत की है जिसमें विद्युत उपकरणों के आधुनिकीकरण द्वारा विद्युत की बचत, बेहतर विनिर्माण पद्धतियों का उपयोग, प्रबंधन पद्धतियों में सुधार, सभी स्तरों पर सूचना प्रौद्योगिकी तथा सूचना

प्रौद्योगिकी समर्थित सेवाओं का प्रतिदिन प्रबंधन में संवर्धित उपयोग, प्रशासनिक व्यय में कमी, प्रभावी मालसूची प्रबंधन, विद्युत उत्पादन में वृद्धि, विक्रेता विकास एवं क्षमता विस्तार के अलावा आर एण्ड डी प्रयास शामिल हैं।

XI. आपात परिस्थितियाँ : घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा वर्ष 2007-08 में 90.85% घटकर वर्ष 2008-09 में 84.55% हो गया। वर्ष 2008-09 के प्रथम नौ माह की हाल की अवधि में आयातों में यह प्रवृत्ति जारी रहने पर घरेलू उद्योग को भरपाई न होने वाली क्षति होगी। यदि रक्षोपाय तुरंत लागू नहीं किए जाते हैं तो घरेलू उत्पादकों का क्षमता उपयोग आगे और कम हो जाने की संभावना है। रक्षोपाय तुरंत लागू न किए जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग को घाटा होगा जिससे वह बाजार हिस्सा पुनः प्राप्त नहीं कर सकेगा। इसके अलावा उनके प्लांट विविध कारणों से पैरा (VII) (g) में दर्शायी अवधियों में बन्द रहे तथा कैपिटल गुड्स पर उनका रिटर्न घटकर -26 प्रतिशत हो गया। तदनुसार, प्रारंभिक निर्धारणों से यह पता चलता है कि आपात परिस्थितियाँ मौजूद हैं जिनमें अनंतिम रक्षोपाय शुल्क लगाए जाने में होने वाले किसी विलंब से ऐसी क्षति होगी जिसकी भरपाई करना कठिन होगा।

xii. अन्य मुद्दे : घरेलू उत्पादकों, प्रयोक्ताओं, आयातकों और अन्य आर्थिक प्रचालकों के हितों की अनंतिम जांच से यह पता चलता है कि घरेलू उत्पादकों के पास प्रौद्योगिकी रूप से प्रतिस्पर्धी संयंत्र, प्रशिक्षित जनशक्ति है और उनके पास उत्पादकता का उच्च स्तर है और वे अपने ग्राहकों के गुणवत्ता एवं सेवा संबंधी सरोकार को पूरा करने में समर्थ रहे हैं। अनंतिम शुल्क लगाए जाने में किसी प्रकार के विलंब से उनकी व्यवहार्यता पर गंभीर असर पड़ेगा। यह विवेकपूर्ण है कि सभी के हित में स्वस्थ और प्रतिस्पर्धी उद्योग कायम रखा जाए। यह स्पष्ट है कि यदि कोई उपाय नहीं किया जाता है तो घरेलू उत्पादकों की कीमतों और बाजार हिस्से दोनों में आगे और कमी आएगी जिससे मालसूची में वृद्धि होगी, उत्पादन में गिरावट आएगी, वित्तीय धाटा बढ़ेगा और रोजगार की हानि होगी।

xiii. विकासशील देश : ये आयात चीन, थाइलैंड और कोरिया से हुए हैं जिनका हिस्सा निम्नलिखित तालिका के अनुसार 3% से अधिक बनता है। अन्य सभी विकासशील देशों से उत्पाद का निर्यात भारत को हुए निर्यातों के 9% से अधिक नहीं बनता है। तदनुसार, चीन जन. गण., थाइलैंड और कोरिया गण. को छोड़कर 14.12.1998 की अधिसूचना सं. 103/98-सी.शु. (यथारंशोधित) द्वारा अधिसूचित सभी विकासशील देशों से एक्रिलिक फाइबर के आयातों पर रक्षोपाय शुल्क नहीं लगाया जा सकता।

तालिका 10

	मात्रा (मी. टन)	कुल आयातों में % हिस्सा
		(मात्रा)
चीन जन. गण.	673118	11.78
थाइलैंड	968117	16.94
कोरिया गण.	329000	5.76

xiv. निष्कर्ष एवं सिफारिश : उपर्युक्त प्रारंभिक जांच परिणामों के आधार पर यह देखा जाता है कि एक्रिलिक फाइबर के संवर्धित आयातों से एक्रिलिक फाइबर के घरेलू उत्पादकों को गंभीर क्षति हुई है। आपात परिस्थितियाँ, जिनमें रक्षोपाय लागू किए जाने में किसी विलंब से ऐसी क्षति होगी जिसकी भरपाई करना कठिन होगा, विद्यमान हैं जिनके तहत गंभीर क्षति तथा गंभीर क्षति के खतरे का अंतिम निर्धारण होने तक 200 दिन की अवधि के लिए अनंतिम रक्षोपाय शुल्क तुरंत लागू करना जरूरी है। घरेलू उत्पादकों द्वारा एक्रिलिक फाइबर के उत्पादन की औसत लागत (गोपनीय), लगाई गई पूंजी पर आय, पाटनरोधी शुल्क सहित आयात शुल्क के वर्तमान स्तर तथा एक्रिलिक फाइबर की औसत आयात कीमतों पर विचार करते हुए घरेलू उद्योग के हित की सुरक्षा करने के लिए “ मूल्यानुसार 20% (बीस प्रतिशत) की दर से संगणित शुल्क ” और “ लागू पाटनरोधी शुल्क यदि कोई हो ” के बीच के अंतर के बराबर रक्षोपाय शुल्क को न्यूनतम रूप से अपेक्षित माना जाता है और सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 की अनुसूची 1 के अंतर्गत 55013000 (फिलामेंट टो) 55033000 (फाइबर-कटाई हेतु अप्रसंस्कृत) तथा 55063000 (फाइबर-कटाई हेतु प्रसंस्कृत) के अंतर्गत वर्गीकृत भारत में एक्रिलिक फाइबर के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश की जाती है।

xv. आगे की प्रक्रिया : अंतिम निर्धारण करने से पूर्व यथासमय सार्वजनिक सुनवाई आयोजित की जाएगी जिसकी तारीख के बारे में अलग से सूचना दी जाएगी।

[फा. सं. डी-22011/09/2009]

एस. एस. राणा, महानिदेशक

DIRECTORATE GENERAL OF SAFEGUARDS, CUSTOMS AND CENTRAL EXCISE**NOTIFICATION**

New Delhi, the 15th April, 2009

Preliminary Findings

Subject : Safeguard investigation concerning imports of Acrylic Fibre.

G.S.R. 252 (E).—Having regards to the Customs Tariff Act, 1975 and the Custom Tariff (Identification and Assessment of Safeguard Duty) Rules, 1997 thereof.

1. Procedure

- i. The notice of initiation of safeguards investigation concerning imports of Acrylic Fibre into India was issued on 09th April 2009 and was published in the Gazette of India, Extraordinary on the same day. A copy of the notice was also sent to all known interested parties as under:-

Domestic Producers

- a. Indian Acrylics Limited,
SCO 49-50, Sector 26,
Madhya Marg, Chandigarh-161019,
- b. Vardhaman Acrylics Limited,
Vardhman Premises,
Chandigarh Road,
Ludhiana - 141 010
- c. Pasupati Acrylon Limited,
M-14, Cannaugh Place,
New Delhi-110001

Importers and Users

- a. Rajasthan Spinning & Weaving Mills Ltd.
Bhilwara Dist. ...
40-41, Community Center
New Delhi - 110 065
- b. Vardhaman Spinning & General Mills
Chandigarh Road
Ludhiana - 141 011
Punjab

- c. Deepak Spinners Limited
SCO 16, 2nd floor
Sector 26
Chandigarh – 160 019
- d. Malwa Cotton Spinning Mills Ltd.
Industrial Area, 'A'
Ludhiana – 141 003
Punjab.
- e. Shiwaliya Spg. & Wvg. Mills (P) td.
Village Dhandari Khurd
G.T. Road
Dhandari khurd
Ludhiana
- f. Deepak Spinners Limited
121, Industrial Area
Distt. Solan Baddi (H.P)
- g. Texas Woollen Mills (P) Limited
Machiwara Road,
Kohara
Distt. Ludhiana
- h. Shiva Fabricator (P) Limited
Village IRAQ
Kuhara Machiwara Road
Machiwara, Distt. Ludhiana
- i. Supreme Tex Mart Limited
424 Industrial Area –A
Cheema Chowk
Ludhiana
- j. Yogendra Worsted Limited
Village Lai Kalan,
Near Neelam Bridge
Tehsil Samrala
Distt. Ludhiana
- k. Shree Rajasthan Syntex Limited
Post Box 5, Simalwara Road
Village Udaipur
Dungarpur, Rajasthan

- l. Banswara Syntex Limited
Industrial Area
Dahad Road
Post Box 21
Banswara, Rajasthan
- m. Ganga Acrowools Limited
G.T. Road
Village Kot Sekhon
The. Khanna
Ludhiana
- n. Shital Fibres Limited
A-17, Focal Point (Extra.)
Jalandhar
- o. Arisudana Industries Limited
Village Jaspalan (Doraha)
Tehsil Khanna
Ludhiana
- p. Sportking India Limited
Village Meharban
Rahon Road
Ludhiana
- q. Jindal Cotex Limited
V.P.O. Jugiana
G.T. Road
Ludhiana
- r. Gurgaon Acrylics Limited
Karnamvati Road
P.O. Jugiana
G.T. Road
Ludhiana

Exporters

- a. Takewang Industrial Company Ltd.
Tae Kwang Bldg.,
162-1 2-Ka
Changchungdong 2-ga
Jung-gu, Seoul, South Korea

- b. Thai Acrylic Fibre Company Ltd.
Mahatun Plaza Bldg. 16th Floor
888/168-169 Ploenchit Road
Lumpini Bangkok
Thailand 10330
- c. Sudamericana de Fibras S.A
Av. Nestor Gambetta 6815
Callao, Peru-Callao 1
- d. Ak-Pa Tekstil Ihracat Pazariama A.S.
Miralay Safik Bey Sak, Ak Han
No. 15-17 Kat 1-2
34437 Gumussuyu, Taksim-
Isanbul/Turkey
- e. Dralon Gmbh
Bayerwerk
P.O.Box 10 04 85
Building B 900
D-41522 Dormagen
- f. Polyacryl Iran Company
Abshar – Sadjad intersection
Isfahah – Iran
- g. China Jilin Chemical Fibre Group Co. Ltd.
No. 516-1, Jiuzhan Street
Jilin city
China
- h. Formosa Plastics
Corporation
201, Tung Hwa, N.Road
Taipei Taiwan
R.O.C. Taiwan
- i. Monte fibre Hi S Pania S.A.
Aribau 185-187, 6A
Plants
0 8021, Barcelona
Spain
- j. Alexandria Fibre Co.
S.A.E. El Nanda
Rd, Amreya
Alexandria
Egypt

k. Aksa Ahrilih Kimya Sanayi Corp.
No. 6 Bahcelievler
Istanbul 34194
Turkey

- ii. A copy of the notice was also sent to Governments of exporting countries through their Embassies in New Delhi.
- iii. Questionnaires were also sent, on the same day, to all known domestic producers, exporters and importers and they were asked to submit their response within 30 days.
- iv. All non confidential versions of the application, response and additional submissions have been kept in the Public Folder.

2. View of the Domestic Industry

- i. The application has been filed by Forum of Acrylic Fibre Manufacturers, Suit 443, 4th Floor, Ashok Hotel, Chanakyapuri, New Delhi-110021 on behalf of domestic producers (1) Indian Acrylics Limited, SCO 49-50, Sector 26, Madhya Marg, Chandigarh-161019, (2) Vardhaman Acrylics Limited, Vardhman Premises, Chandigarh Road, Ludhiana-141010 and (3) Pasupati Acrylon Limited, M-14, Cannaught Place, New Delhi-110001 for imposition of Safeguard Duty on imports of Acrylic Fibre in all forms into India to protect the domestic producers of acrylic fibre (staple & tow) against serious injury caused by the increased imports of Acrylic Fibre into India. The applicants have made following major points:-
- ii. The applicants have alleged that increased imports of Acrylic fibre (staple and tow) commercially simply known as acrylic fibre into India have caused serious injury to domestic industry and is continuing to threaten serious injury to domestic industry. The acrylic fibre is a long chain of synthetic polymer composed of at least 85% by weight of acrylonitrile units. Acrylic fibre can be acrylic staple fibre or acrylic tow under Customs Tariff Act 1975. However these both items are known as acrylic fibre in the commercial parlance. The only difference between acrylic staple fibre and acrylic tow is the difference in length. Cut lengths of fibre of up to 2 meters length are known as staple fibres. Acrylic Fibre in its different forms are classified as under

Table 1

Name of the Products	HSN Chapter Heading	Customs Tariff Heading	ITC Heading
Acrylic Fibre	i. 55013000 (filament tow)	i. 55013000 (filament tow)	i. 55013000 (filament tow)
	ii. 55033000 (Fibre - unprocessed for spinning)	ii. 55033000 (Fibre - unprocessed for spinning)	ii. 55033000 (Fibre - unprocessed for spinning)
	iii. 55063000 (Fibre - processed for spinning)	iii. 55063000 (Fibre - processed for spinning)	iii. 55063000 (Fibre - processed for spinning)

- iii. They have alleged that surge in imports are taking place at lower prices making them lose their market share.
- iv. The increased imports at lower prices are on account of unforeseen developments as mentioned below:
 - a. At present acrylic fiber industry is concentrated in Asia with a share of more than 60% in total global production of Acrylic Fibre. The major players of Asia namely China, Japan and Taiwan have very small domestic demand compared to their respective production capacities. These countries were primarily exporting their surplus production to their traditional markets namely USA and Europe. Due to global meltdown, the Acrylic Fibre market has shrunk to a great extent worldwide and more phenomenally in USA, Europe and China. Further the bigger plants of China are Government run PSUs. Approximately 71% of the Chinese capacity is controlled by Government through their PSUs. Further these capacities are part of large integrated upstream petrochemical complexes starting from crude oil refining. Chinese government is running the downstream plant of acrylic fibre at full capacity because it will affect every plant of complex in the chain. The result is that these units are left with piled stock of acrylic fiber which they are trying to export at lower prices to India, which is still growing at a fair rate of growth. As a result they started exporting the product into Indian market at a reduced price which is causing serious injury and threatening to cause serious injury to domestic industry. For the same reason of uneven recession and uneven growth there is increase in imports of this item from some other countries to India.
- v. Their inventory is on sharp rise, even after lower production.
- vi. The domestic industry was running into profit which has incurred huge losses in first nine months of 2008-09.
- vii. They have requested for imposition of Safeguard duty to protect the domestic producers of acrylic fibre against serious injury as well as threat of continuing serious injury caused by the increased imports.
- viii. They have alleged that unforeseen development has caused increased in imports and increased in imports has caused serious injury. There is no other factor which has perceptible bearing on the serious injury /threat of serious injury faced by the domestic producer.
- ix. The applicant submits that the imposition of safeguard duty on acrylic fibre shall not cause harm to public interest as prices of domestic acrylic fibre are more or less stable in India.
- x. Applicants' proposes to adopt an appropriate strategy to improve upon efficiency and to bring cost effectiveness to compete with the international players.
- xi. They have also requested for imposition of provisional Safeguard duty in light of critical circumstances, leading to damage which would be difficult to repair.

3. Findings of D.G.

- i. The issue to impose immediate safeguard measures is examined. It has been found that a total of 168 Safeguard Initiations have been reported to the WTO during the period between 29.03.1995 and 12.11.2008. It has been observed that in 15 of these cases provisional safeguard measures have been recommended/ imposed within 30 days of initiation of the safeguard investigation. In several cases the provisional safeguard measures have been recommended on the same day as the date of initiation of the investigation. The Rule 9 of Customs Tariff (Identification And Assessment of Safeguard Duty) Rules, 1997 notified vide Notification No. 35/97-NT-Customs dated 29.07.1997 prescribes that the Director General shall proceed expeditiously with the conduct of the investigation and in critical circumstances, he may record a preliminary finding regarding serious injury or threat of serious injury. The principles governing investigations have been provided in the Rule 6 of the Customs Tariff (Identification and Assessment of Safeguard Duty) Rules, which is independent to Rule 9. The Rule 15 of the Customs Tariff (Identification And Assessment of Safeguard Duty) Rules provide for refund of differential Safeguard duty in case safeguard duty imposed after conclusions of the investigations is lower than the provisional duty already imposed and collected. The harmonious reading of Rules 6,9 and 15 of the said Rules leads to a conclusion that the Rules provide for expeditious recommendation of provisional Safeguard duty based on preliminary findings and refund of the differential duty in case it is ascertained that the duty imposed after conclusion of investigation following natural justice as enshrined in the Rule 6 is lower than the provisional Safeguard Duty. However, in critical circumstances any delay in imposition of provisional Safeguard duty may cause damage which would be difficult to repair. Accordingly, it was considered prudent to analyze circumstances to assess whether the same falls in the category of critical circumstances.
- ii. The issue whether safeguard duty can be imposed when antidumping duty is in force on product under consideration is examined. The section 9A of Customs Tariff Act 1975 deals with imposition of antidumping duty not exceeding the margin of dumping. The section of Customs Tariff Act 1975 deals with imposition of safeguard duty on goods imported into India with a purpose of protecting domestic industry from continued serious injury from imports which are taking place in such increased quantities and under such conditions so as to cause or threatening to cause serious injury to domestic industry. It is to be noted that under Section 8B of Customs Tariff Act 1975 read with Agreement on Safeguards and Article XIX of GATT 1994, the reason for imposition of safeguard duty is not the dumping or subsidized imports rather it is sudden and sharp increase in imports which are not attributable to dumping or subsidy. Therefore the reasons for imposition of these two duties as well as the purpose of imposition of these two duties are different. Further subsection (3) of Section 8B envisages imposition of a number of duties at the same time under Customs Tariff Act 1975 or under any other law in force. The subsection (3) of Section 8(B) reads as below.

"The duty chargeable under this section shall be in addition to any other duty imposed under this Act or under any other law for the time being in force."

Therefore it is clear that under the law there is no bar in imposition of safeguard duty when antidumping duty is already in force, provided the requirements of imposition of safeguard duty under Section 8B of Customs Tariff Act 1975 are met.

iii. The product under investigation

- a. The applicants have alleged that increased imports of Acrylic fibre (staple and tow) commercially simply known as acrylic fibre into India have caused serious injury to domestic industry and is continuing to threaten serious injury to domestic industry. The acrylic fibre is a long chain of synthetic polymer composed of at least 85% by weight of acrylonitrile units. Acrylic fibre can be acrylic staple fibre or acrylic tow under Customs Tariff Act 1975. However these both items are known as acrylic fibre in the commercial parlance. The only difference between acrylic staple fibre and acrylic tow is the difference in length. Cut lengths of fibre of up to 2 meters length are known as staple fibres. Acrylic Fibre in its different forms are classified under 55013000 (filament tow), 55033000 (Fibre - unprocessed for spinning) and 55063000 (Fibre - processed for spinning) under Schedule I of the Customs Tariff Act 1975. Acrylic Fibre is a widely used raw material for manufacture of winter clothing.
- b. The products falling under these three headings at eight digit level are same as far as their technical characteristics, chemical composition and other basic features are concerned. The products of all these three headings find common uses. The process of cutting the tow or combing of tow/fibre etc does not result in any significant value addition. The users of Acrylic Fibre can start their operation with any of the above mentioned three products. Therefore these products technically and commercially substitute of each other and therefore they are like and directly competing products. Despite possible minor superficial differences, in terms of quality, these products have the same basic physical characteristics and the same end uses. These are sold via similar or identical sales channel. These products compete mainly on price. Imposition of safeguard duty on one heading at eight digit level in isolation will not serve any purpose as importers will start importing other directly competing products. The domestic industry manufactures all the three products. In view of above, for the purposes of safeguard investigation the product basket consisting of acrylic fibre consisting of the product mentioned above needs to be considered as the 'product under consideration'.

- iv. **Domestic Industry** - The application has been filed by Forum of Acrylic Fibre Manufacturers on behalf of domestic producers (1) Indian Acrylics Limited, (2) Vardhaman Acrylics Limited, and (3) Pasupati Acrylon Limited, for imposition of Safeguard Duty on imports of Acrylic fibre in all forms. The applicants accounts for 100% of the total domestic production. Accordingly, the applicants constitute domestic industry in terms of clause (b) of subsection (6) of Section 8B of the Customs Tariff Act, 1975.

- v. **Unforeseen Developments:** As a result of current unforeseen and unexpected economic melt down and recession, some of the countries are faced with fall in export to their normal markets, idling of production capacities in those countries. Exporters of these countries are resorting to export of their products in increased quantities at low prices to Indian market, which still continues to enjoy growth.
- vi. **Increased Imports -** Acrylic fibre (staple and tow) is imported into India in substantial quantities from Thailand, Japan, Germany, China, Korea, Taiwan and Belarus. The imports of acrylic fibre have shown an increasing trend in absolute terms as well as compared to the domestic production. The share of imports during the period of investigation is as under:

Table 2

Year	Imports (MT)	Domestic Production (MT)	% Share of imports	% Share of domestic production
2005-06	11747	102516	10.28	89.72
2006-07	11700	85168	12.08	87.92
2007-08	7360	77515	8.67	91.33
2008-09 (First nine months)	8393	54661	13.32	86.68

The imports of acrylic fibre have thus increased in absolute terms as well as in relative terms compared to total domestic market. Further there is a sharp and sudden increase in 2008-09 compared to 2007-08.

vii. **Domestic injury and Threat of serious injury –**

- a. **Sales:** The sales of the product under investigation has seen sudden and sharp decline during the year 2008-09 compared to the preceding year as apparent from the Table below

Table: 3

Year	Imports (MT)	Domestic Sales (MT)	% Share of imports	% Share of domestic Sales
2005-06	11747	93587	10.96	89.04
2006-07	11700	76497	13.27	86.73
2007-08	7360	73698	9.15	90.85
2008-09 (First nine months)	8393	48917	15.45	84.55

- b. **Market Share of domestic Industry:** Market share of domestic industry was 89.04% during 2005-06 which declined to 86.73% in 2006-07 and then improved to 90.85 % during 2007-08. In the first nine months of 2008-09, market share of domestic industry saw significant fall to 84.55% whereas there is a growth in imports in absolute terms as well as relative terms.

- c. **Production:** The average monthly production of the product under investigation by the domestic industry has seen a continuous decline during the period of investigation.

Table: 4

Year	2005-06	2006-07	2007-08	2008-09 (nine months)
Domestic production (MT)	102516	85168	77513	54641
Average Monthly Production(MT)	8543	7097	6459	6071

- d. **Capacity Utilization:** The capacity utilization had improved in 2006-07 compared to 2005-06, but the utilization decreased continuously. The capacity utilization of the applicants has fallen to 80.95% in the third quarter of the financial year 2008-09 from a high capacity utilization of 93.19% in 2006-07.

Table 5

	2005-06	2006-07	2007-08	2008-09 (Apr-Dec)
Capacity Utilization (%)	88.68	93.19	86.13	80.95

- e. **Productivity:** The preliminary investigation shows no indication to suggest that the injury is on account of loss of productivity.
- f. **Profitability:** The applicant was running in profit till 2007-2008, however in 2008-2009 in first nine months the applicant has incurred a loss of Rs 3318 per kg (Index) taking profit of Rs. 100 per kg (index) in the year 2006-07.

Table 6

	2005-06	2006-07	2007-08	2008-09 (Apr-Dec)
Profit per kg	-721	100	106	-3318

- g. **Employment:** The domestic industry has been shut down intermittently as below for want of demand causing idling of employees.

Table 7

Plant	Shut Down Period	Capacity Shut Down
Indian Acrylic Ltd.	From 19.8.08 to 14.11.08(three months)	10500 MT
Pasupati Acrylon Ltd	From 11.8.08 to 26.8.08 From 18.9.08 to 16.10.08 From 8.12.08 to 21.12.08 (two months)	5000 MT
Vardhman Acrylic Ltd	During Dec- January,09 (one month)	900 MT

h. The period of Injury:

- a. An examination of the above injury parameters shows that the maximum injury has been suffered by the domestic industry during the recent period of first nine months of 2008-09. In Argentina – Footwear (EC - WT/DS121/AB/R), the WTO Appellate Body held that the increase in imports may not be over a period of five years. The appellate body held that increase in imports must have been in the recent period to cause or threaten to cause "serious injury". Para 130 of the decision in this regard reads as below.

Para 130: All the same, while we do not find that the Panel erred in its application of the requirement in Article 2.1 of the Agreement on Safeguards that the "product is being imported ... in such increased quantities", we do find the Panel's interpretation of that requirement somewhat lacking. We note that the Panel characterized this condition in Article 2.1 on several occasions in the Panel Report simply as "increased imports". However, the actual requirement, and we emphasize that this requirement is found in both Article 2.1 of the Agreement on Safeguards and Article XIX:1(a) of the GATT 1994, is that "such product is being imported ... in such increased quantities"¹, "and under such conditions as to cause or threaten to cause serious injury to the domestic industry". (emphasis added) Although we agree with the Panel that the "increased quantities" of imports cannot be just any increase, we do not agree with the Panel that it is reasonable to examine the trend in imports over a five-year historical period. In our view, the use of the present tense of the verb phrase "is being imported" in both Article 2.1 of the Agreement on Safeguards and Article XIX:1(a) of the GATT 1994 indicates that it is necessary for the competent authorities to examine recent imports, and not simply trends in imports during the past five years – or, for that matter, during any other period of several years.² In our view, the phrase "is being imported" implies that the increase in imports must have been sudden and recent.

- b. The Indian domestic law as incorporated in Section 8B of Customs Tariff Act 1975, which is based on the agreement on Safeguard and Article XIX of GATT 1994, also uses the present tense. Therefore safeguard duty can be imposed in a case where the increase in imports is not over a historical period of five years rather over a shorter but recent period. Since the increase in Imports in the present case is in a recent period of nine months which is sudden, sharp and significant enough and is also causing "serious injury" as evident from various parameters discussed above, this is a deserving case for imposition of Safeguard duty.

viii. Causal link between increased import and serious injury or threat of serious injury-

- a. The various injury parameters on time scale are as below.

¹Article 2.1 of the *Agreement on Safeguards* contains the additional words "absolute or relative to domestic production".

²The Panel, in footnote 530 to para. 8.166 of the Panel Report, recognizes that the present tense is being used, which it states "would seem to indicate that, whatever the starting-point of an investigation period, it has to end no later than the very recent past." (emphasis added) Here, we disagree with the Panel. We believe that the relevant investigation period should not only end in the very recent past, the investigation period should be the recent past.

Table 8

Year	2005-06	2006-07	2007-08	Apr'08-Dec'08
Imports (Indexed)	160.00	159.00	100.00	152.00
Share of domestic Industry %	89.04	86.73	90.85	84.55
Share of Imports%	10.96	13.27	9.15	15.45
Capacity Utilization of domestic industry%	88.68	93.19	86.13	80.95
Return on Capital employed%	-1.74	7.63	7.75	-26.04
production per day (indexed)	100.00	111.63	102.79	97.67
Closing stock (indexed)	100.00	121.53	58.81	188.25

- b. A comprehensive evaluation of parameters as above for the period from 2005-06 up to the first nine months of the financial year 2008-09 demonstrates serious injury and significant impairment of the Indian producers of acrylic fibre. The figures and chart above shows that in Apr-Dec 2008, Imports in absolute terms as well as Share of Imports has gone up when compared to 2007-08. In the same period when imports have gone up, domestic industry is injured as Capacity Utilization of domestic industry, Share of domestic Industry, Return on Capital employed, production per day is down and Closing stock have gone up. Therefore in the recent period there is a surge in import and as a result of which there is a serious injury to domestic industry during the same period. The huge loss during the current financial year compared to the previous years profit also coincides with significant increase in share of imports. This clearly depicts a direct correlation between the increase in imports at lower prices and serious injury suffered by the domestic industry and the increase in imports has had injurious effects in terms of pressure on prices and a reduction in volume sold by the domestic industry.

- ix. **The Anti dumping factor:** At present following anti dumping duties on Acrylic Fibre are in force.

Table 9

Notification no.	country	duty amount	valid upto
117/2004 -cus dated 30-12-2004	Belarus	Difference in assessable value and \$1681.35 /MT	29.12.2009
114/2004 -cus dated 21-12-2004	Japan	Difference in assessable value and \$1681 /MT	20.12.2009
123/2008-cus dated 20.11.2008	Korea RP	\$0.225/kg.	19.11.2013
123/2008-cus dated 20.11.2008	Thailand	\$ 0.16/kg to \$ 0.313/Kg.	19.11.2013

I prima facie agree with the applicant's argument that present injuries are not on account of dumping. The injury attributable to dumping has already been taken care of by imposition of anti dumping duty which is equal to margin of dumping. The present injury is attributable to increased imports.

- x. **Adjustment plan** – The domestic producer has submitted detailed adjustment plan to cut cost, which includes Power saving by modernizing electrical equipments, Use of better manufacturing practices, Improvement in management practices, enhanced use of Information Technology (IT) and IT enabled services in every day management at all the levels, Reduction of administrative expenses, Effective Inventory Management, increasing power generation, vendor development and R&D efforts apart from capacity expansion.
- xi. **Critical Circumstances:** The market share of domestic industries has fallen from 90.85% in 2007-08 to 84.55% in 2008-09. The trend of imports in the recent period of first nine months of 2008-09, if continues will cause irreparable damage to domestic industry. The capacity utilization of domestic producers is likely to go down substantially further if safeguard measures are not taken immediately. The domestic industry is making losses incapacitating them to regain market share, if immediate safeguard measures are not taken. Moreover their plants were closed for various periods as given in para (vii) (g) above and the return on capital has gone down to -26%. Accordingly, the preliminary determination shows that critical circumstances exist in which delay in imposing provisional safeguard duty cause would damage which it would be difficult to repair.
- xii. **Other Issues:** The provisional examination of the interests of the domestic producers, users, importers and other economic operators indicate that the domestic producers have technologically competitive plants, trained manpower and enjoyed high level of productivity and are able to meet quality and service concern of their customers. Any delay in imposition of provisional safeguard duty would seriously jeopardize their viability. It is prudent to have a healthy and competitive industry in the interest of all. It is apparent that if no safeguard measures are taken, both the prices and the market share of the domestic producers will further deteriorate resulting in increased inventories reduced production, increased losses and loss of employment.
- xiii. **Developing Nations:** There have been imports from China, Thailand and Korea, which are more than 3% as shown below. Exports of the product from all other developing countries taken together do not contribute more than 9% of exports to India. Accordingly, imports of acrylic fibre from all developing nations as notified vide Notification No. 103/98-Cus dated 14.12.1998 (as amended) except China PR, Thailand and Korea PR, may not attract safeguard duty.

Table 10

	Qty (MT)	% share in
		total imports
		(Volume)
CHINA P RP	673118	11.78
THAILAND	968117	16.94
KOREA RP	329000	5.76

- xiv. **Conclusion and Recommendation:** On the basis of the above preliminary findings it is seen that increased imports of acrylic fibre have caused serious injury to domestic producers of acrylic fibre. There exist critical circumstances, where any delay in application for safeguard measures would cause damage which it would be difficult to repair, necessitating immediate application of provisional safeguard duty for a period of 200 days, pending a final determination of serious injury and threat of serious injury. Considering the average cost of production of acrylic fibre by the domestic producers (confidential), a reasonable return on capital employed, the present level of import duties including anti dumping duties and the average import prices of acrylic fibre, **safeguard duty equal to the difference between the 'duty calculated at the rate of 20% (twenty Percent) ad-valorem' and 'anti dumping duty if any in force'** is considered to be the minimum required safeguard duty to protect the interest of domestic industry and is recommended to be imposed on imports of acrylic fibre classified under sub-heading No. 55013000 (acrylic filament tow), 55033000 (Acrylic Fibre - unprocessed for spinning) and 55063000 (Acrylic Fibre - processed for spinning) of Schedule I of the Customs Tariff Act 1975 into India.
- xv. **Further Process:** A public hearing will be held in due course before making a final determination, for which the date will be informed separately.

[F.No.D-22011/09/2009]
S. S. RANA, Director General